शिवशक्ति सरस्वती माँ

41. मम्मा को योग लगाना नहीं पड़ता था किन्तु वह निरन्तर, सहज व स्वत: योगिन थीं। मन्मनाभव, मध्याजीभव के महामंत्र को वह स्वाभाविक रूप में धारण किये हुए थीं। अत: इस धरा पर चलते-फिरते भी इससे न्यारी भासती थीं। ऐसा लगता था जैसेकि उनकी बुद्धि सदा परमधाम में लटकी हुई हो तथा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर रही हो। वह जब योगनिष्ठ होती थीं तो वातावरण में सन्नाटा छा जाता था। अन्य व्यक्तियों को शान्ति एवं शक्ति के शक्तिशाली प्रकम्पन अनुभव होते थे। उनमें योगियों के समस्त लक्षण विद्यमान थे जिस कारण उनका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था।

42. मातेश्वरी जी का ध्यान निजी पुरुषार्थ पर बहुत रहता था। सदा उनके मुख से यही शब्द निकलते थे कि ''जैसा कर्म हम करेंगे, हमें देख दूसरे भी करेंगे।'' ऊँचे स्वर से बोलते हुए उनको मैंने कभी नहीं देखा, आवाज़ से हँसना तो दूर की बात थी।

43. जब मम्मा योग में बैठती थीं अथवा दूसरों को दृष्टि देती थीं उस समय हरेक को विचित्र अनुभव होते थे। मम्मा के स्थूल स्वरूप की बजाय लाइट का स्वरूप ही नज़र आता था। जब मम्मा सामने बैठती थीं तो, जैसे हम कहते हैं कि अव्यक्त वातावरण बनाओ, विदेह अवस्था में रहो, डेड साइलेन्स में रहो, वह सब सहज ही हो जाता था। भले ही, सब ब्रह्मा-वत्स जानते थे कि मम्मा कुमारी हैं लेकिन उनको जो भी देखता था माँ का, देवी का, फ़रिश्ते का दर्शन होता था। देहभान होता ही नहीं था, जैसे छोटा बच्चा अपनी माँ की गोद में सहज रूप से चला जाता है वैसे हर ब्रह्मा-वत्स मातेश्वरी जी की गोद में चला जाता था।

44. मम्मा का स्व-पुरुषार्थ बहुत था। मैंने मम्मा में हमेशा यह देखा कि वे ज़्यादा लौकिकता अर्थात् बाह्यमुखता में नहीं गयी। इधर-उधर की बातें अर्थात् ज्ञान, योग, धारणा, पुरुषार्थ के अलावा और कोई बात हमने कभी मम्मा के मुख से सुनी ही नहीं। पहले यह सिस्टम (पद्धति) थी कि जो भी बात करेगा वह उस दिन की मुरली की प्वाइंट्स से शुरू करेगा और अन्त भी मुरली की प्वाइंट्स से ही करेगा। बाबा या मम्मा किसी को भी पत्र लिखते थे तो भी उस पत्र के आरम्भ और अन्त में उस दिन की ज्ञान-मुरली की प्वाइंट्स अथवा धारणा की प्वाइंट्स अथवा योग की प्वाइंट्स लिखते थे।